Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 3 | Issue : 7 | July 2017

# STUDY OF MENTAL PRESSURE AND EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF STUDENTS

# विद्यार्थियों के मानसिक दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

Pradeep Kumar Tiwari [1] | Dr. Satish Kumar Singh [2]

[1] Research Scholar, Department of Education, IFTM University, Lodhipur Rajput, Delhi Road, Moradabad (U.P.) - 244102.
[2] Assistant Professor, Department of Education, IFTM University, Lodhipur Rajput, Delhi Road, Moradabad (U.P.) – 244102.

## ABSTRACT

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और अपने अस्तित्व एवं विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य के जीवन को सही दिशा देने एवं सार्थक बनाने में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा परिवर्तन एवं संस्कृति के हस्तान्तरण का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा ही मनुश्य को आदर्श नागरिक बनाती है और समाज तथा देश की विभिन्न समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराती है। इसलिए राज्य और केन्द्र सरकारें स्वतंत्रता के बाद से ही लगातार शिक्षा को सभी नागरिकों तक पहँचाने के लिए विभिन्न प्रकार की नीतियों को संचालित कर रही हैं। समाज में उत्पन्न होने वाली विभिन्न कुरीतियों और अन्याय से निपटने के लिए आवश्यक है कि समाज के सभी बच्चें शिक्षा ग्रहण करें और उनमें समस्याओं को समझने तथा उनका समाधान करने की क्षमता का समुचित विकास हो। शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक वातावरण, खानपान, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, रूचि और मानसिक दबाव आदि सभी का प्रभाव स्पश्ट रूप से दिखाई पड़ता है। अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव को समझने के लिए सुल्तानपुर जनपद के सरकारी इण्टर कालेजों से 140 विद्यार्थियों का अध्ययन सर्वेक्षण विधि के द्वारा किया गया। शोध आंकड़ों के विश्लेशण के लिए **डॉ0 विजय लक्ष्मी तथा श्रुति नरेन** के द्वारा निर्मित **''तनाव मापनी''** का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों के 10वीं के प्राप्तांक को उनके शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया। अध्ययन के पश्चात् शोधकर्ता ने पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक दबाव से प्रभावित होती है। अर्थात् अधिक मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा कम ही होती है। आँकड़ों के विश्लेशण से स्पश्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**प्रमुख शब्दः** मानसिक दबाव, शैक्षिक उपलब्धि और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी (Secondary level students) आदि।

**प्रस्तावनाः**

मानव विकास में मन और मस्तिष्क के विकास का महत्वपूर्ण स्थान है। मन और मस्तिष्क का स्वस्थ रहकर कार्य करने की क्षमता बनाये रखना ही मानसिक स्वास्थ्य है। मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति का विकास कुंठित हो जाता है और वह समाज पर बोझ बन जाता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वही है जो स्वयं सुखी है, अपने पड़ोसियों में शांतिपूर्वक रहता है, अपने बच्चों को स्वस्थ नागरिक बनाता है तथा अपनी शक्ति के अनुरूप समाज के हित के लिए भी कार्य करता है। वास्तव में शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने पर ही व्यक्ति अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सकता है।

परन्तु आज का युग मानसिक तनाव का युग है। बच्चों से लेकर वृद्ध तक हर इंसान किसी न किसी प्रकार के मानसिक तनाव से ग्रस्त दिखाई देता है। आज अनेकों विद्यार्थी व्यवहारात्मक तथा संवेगात्मक समस्याओं से जूझ रहे हैं जो उनके मानसिक एवं शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित कर रही है। 1999 में यूनाइटेड स्टेट्स के सर्जन जनरल (U.S. Dept. of Health and Human services, 1999) ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि प्रत्येक पाँच बच्चों में से एक बच्चा अपने शैक्षिक जीवन में मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त होता है। जब बच्चे मानसिक रूप से अस्वस्थ होते हैं तो वे प्रायः विद्यालय में लगातार उपस्थित नहीं हो पाते। वे बच्चे अपने गृह कार्य को भी पूर्ण करने में कठिनाई अनुभव करते हैं तथा अपने साथियों के साथ उनका सामंजस्य भी ठीक तरह से स्थापित नहीं हो पाता।

यूँ तो आजकल विद्यालयों में बहुत अधिक पढ़ाया जाता है या पढ़ना पड़ता है, परन्तु बहुत कम सीखा या समझा जाता है। इसलिए विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम की व्यवस्था में बाल केन्द्रित दृष्टिकोण की अनुपस्थिति अखरती है। पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु में संगठन और तालमेल की कमी है। ये कमियाँ स्पष्टतौर पर रटने तथा अपर्याप्त समझ का कारण बन जाती है जिसके परिणामस्वरूप बालकों में मानसिक तनाव तथा मानसिक अस्वस्थता उत्पन्न होती है।

अतः शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है या नहीं। और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्या अन्तर है।

**समस्या कथनः**

विद्यार्थियों के मानसिक दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

**शोध के उद्देश्यः**

शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पनाएँः**

उद्देश्यों के आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता।
3. शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता।
4. शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता।
5. अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता।

Copyright© 2016, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

6. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण:**

1. **शैक्षिक उपलब्धि:** शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में किस सीमा तक सफल हुए हैं, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यता का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल आदि योग्यता की मात्रा से है। सुपर (1967) के शब्दों में ''एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

2. **मानसिक दबाव:** मानसिक तनाव का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। और इस समस्या पर अब दिन प्रतिदिन ध्यान देने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। आवश्यकता के अनुरूप अनुकूलन न कर पाने पर मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। प्रस्तुत अध्ययन में मानसिक दबाव से आशय उस उलझन या परेशानी से है जो विद्यार्थी अपने अध्ययन के दौरान तब अनुभव करता है जब वह किसी परिस्थिति में वांछित स्तर का कार्य नहीं कर पाता। प्रायः बच्चों में मानसिक दबाव तब उत्पन्न होता है जब वह नकारात्मक संवेगों से ग्रसित होते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे अपना मानसिक सन्तुलन खो देते हैं और सही निर्णय नही ले पाते।

**शोध जनसंख्या एवं सीमांकन :**

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद द्वारा संचालित सुल्तानपुर जनपद के सरकारी इण्टर कालेजों में अध्ययनरत् केवल कक्षा दस के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

**शोध न्यादर्श और न्यादर्श चयन विधि :**

जब किसी जनसंख्या के किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को चुना जाता है तो चुनने की इस प्रक्रिया को न्यादर्शन और चुने हुए समूह को न्यादर्श कहा जाता है। प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है और सरल यादृच्छिक विधि से 140 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 81 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी और 59 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी जिसमें 76 शिक्षित अभिभावकों और 64 अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थी शामिल हैं।

**शोध अध्ययन की विधि और शोध उपकरण:**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध आंकड़ों के विश्लेषण के लिए **डॉ0 विजय लक्ष्मी** तथा **श्रुति नारेन** के द्वारा निर्मित ''तनाव मापनी'' का प्रयोग किया गया है। तथा विद्यार्थियों के 10वीं के प्राप्तांक को उनके शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है।

**शोध सांख्यिकी:**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात और टी परीक्षण के लिए सार्थकता स्तर 0.05 का प्रयोग किया गया है।

**शोध आंकड़ों का सारणीयन और अर्थापन:**

**न्यादर्श विवरण**

| Gender | Rural | Urban | Educated Parents | Uneducated Parents | Total |
|---|---|---|---|---|---|
| Boys | 34 | 36 | 32 | 38 | 70 |
| Girls | 25 | 45 | 44 | 26 | 70 |
| Total | 59 | 81 | 76 | 64 | 140 |
| G. Total | 140 | | 140 | | |

**ग्राफ द्वारा आंकड़ों का निरूपण**

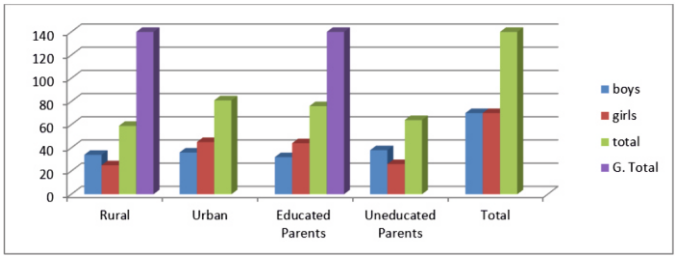


**परिकल्पना संख्या–1:** ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता''

**सारणी संख्या–1**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | 59 | 382.91 | 45.94 | 59.38 | प्रभाव पड़ता है। | अस्वीकृत |
| मानसिक दबाव | 59 | 20.85 | 9.08 | | | |

($df=N_1+N_2-2=59+59-2=116$)

उपर्युक्त सारणी–2 में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक दबाव के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। इन न्यादर्शो के माध्य क्रमशः 382.91 और 20.85 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 59.38 हुआ। यह मान स्वतंत्रता के अंश 116 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.98 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर अस्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या –2:** ''ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता''

**सारणी संख्या–2**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | 59 | 382.91 | 45.94 | 59.38 | प्रभाव पड़ता है। | अस्वीकृत |
| मानसिक दबाव | 59 | 20.85 | 9.08 | | | |

($df=N_1+N_2-2=59+59-2=116$)

उपर्युक्त सारणी–2 में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक दबाव के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। इन न्यादर्शो के माध्य क्रमशः 382.91 और 20.85 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 59.38 हुआ। यह मान स्वतंत्रता के अंश 116 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.98 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर अस्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या–3:** ''शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता''

**सारणी संख्या–3**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | 81 | 395.76 | 51.44 | 64.97 | प्रभाव पड़ता है। | अस्वीकृत |
| मानसिक दबाव | 81 | 17.99 | 9.61 | | | |

($df=N_1+N_2-2=81+81-2=160$)

उपर्युक्त सारणी–3 में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक दबाव के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। इन न्यादर्शो के माध्य क्रमशः 395.76 और 17.99 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 64.97 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतंत्रता के अंश 160 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.96 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर अस्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या–4:** ''शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता''

**सारणी संख्या–4**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | 76 | 406.03 | 49.70 | 67 | प्रभाव पड़ता है। | अस्वीकृत |
| मानसिक दबाव | 76 | 17 | 9.59 | | | |

$(df = N_1+N_2-2 = 76+76-2 = 150)$

उपर्युक्त सारणी–4 में शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक दबाव के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। इन न्यादर्शो के माध्य क्रमशः 406.03 और 17 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 67 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता के अंश 150 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.96 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर अस्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या–5:** ''अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव नही पड़ता''

**सारणी संख्या–5**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैक्षिक उपलब्धि | 64 | 371.72 | 42.46 | 64.60 | प्रभाव पड़ता है। | अस्वीकृत |
| मानसिक दबाव | 64 | 21.80 | 8.70 | | | |

$(df = N_1+N_2-2 = 64+64-2 = 126)$

उपर्युक्त सारणी–5 में अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक दबाव के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। गणना करने पर इन आँकड़ों के माध्य क्रमशः 371.72 और 21.80 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 64. 60 प्राप्त हुआ। यह मान स्वतंत्रता के अंश 126 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.96 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर अस्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या–6:** ''ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता''

**सारणी संख्या–6**

| चर | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रान्तिक अनुपात (C.R.) | सार्थकता स्तर | परिणाम स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 59 | 382.91 | 45.94 | –1.55 | कोई सार्थक अन्तर नहीं है। | स्वीकृत |
| शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 81 | 395.76 | 51.44 | | | |

$(df = N_1+N_2-2 = 59+81-2 = 138)$

उपर्युक्त सारणी–6 में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया है। इन आँकड़ों के माध्य क्रमशः 382.91 और 395.76 प्राप्त हुए हैं। इनके मध्यमानों तथा मानक विचलनों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान –1.55 प्राप्त हुआ। यह मान स्वतंत्रता के अंश 138 के 0.01 और 0.05 विश्वास स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.65 और 1.96 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों पर स्वीकार कर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**निष्कर्षः**

उपरोक्त परिकल्पनाओं के परिणाम (स्वीकृत अथवा अस्वीकृत) के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न निष्कर्ष निकाले गये हैं–

- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है। अर्थात् अधिक मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा कम होती है।
- आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उन विद्यार्थियों के मानसिक दबाव का प्रभाव पाया जाता है।
- शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उन विद्यार्थियों के मानसिक दबाव का असर पड़ता है। अर्थात् कम मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक मानसिक दबाव वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा उच्च स्तर की होती है।
- शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों और अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी उनके मानसिक दबाव का प्रभाव पड़ता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च या निम्न होने के लिए उनके आर्थिक, पारिवारिक, शारीरिक तथा सामाजिक कारक ही उत्तरदायी होते हैं।

अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए शिक्षकों के साथ–साथ परिवार के सदस्यों को भी अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा जिससे विद्यार्थियों अपने उन्नति के पथ पर सुचारू रूप से चलने में सक्षम हो सके।

**शैक्षिक निहितार्थ सुझावः**

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल सुल्तानपुर जनपद के सरकारी इण्टर कालेजों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को ही लिया गया है। भविष्य में यह शोध राज्य अथवा मण्डल स्तर पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों, शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों, शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों तथा अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियो पर आधारित है। भविष्य में इसे जाति, धर्म अथवा सामाजिक धार्मिक स्थिति के आधार पर बाँटा जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में केवल शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक दबाव को ही लिया गया है। भविष्य में अन्य चरों को भी अध्ययन के लिए शामिल किया जा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः**


1. अस्थाना, विपिन, अस्थाना, निधि एवं श्रीवास्तव, विजया (2008). शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2. पाठक, पी0 डी0 (2016). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा–2 : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
3. पाण्डेय, राम सकल (2013). शिक्षामनोविज्ञान, मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो।
4. वर्मा, प्रीती एवं श्रीवास्तव, डी. एन. (2010). बाल मनोविज्ञानः बाल विकास. आगरा–2: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
5. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (2014). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6. सिंघल, अनुपमा और कुलश्रेश्ठ, एस0 पी0 (2014). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
7. सुपर, डी0 सी0 (1957). द साइकोलॉजी ऑफ द कैरियर्स, न्यूयार्क : हार्पर एण्ड ब्रदर्स।

**बेबसाइट्सः**

8. www.researchineducation.in.
9. web.http/Wikipedia.org/mental health
10. www.shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/10352/13/13_bibliography.pdf